www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नव जागरण के देवदूत

महायोगी अरविंद

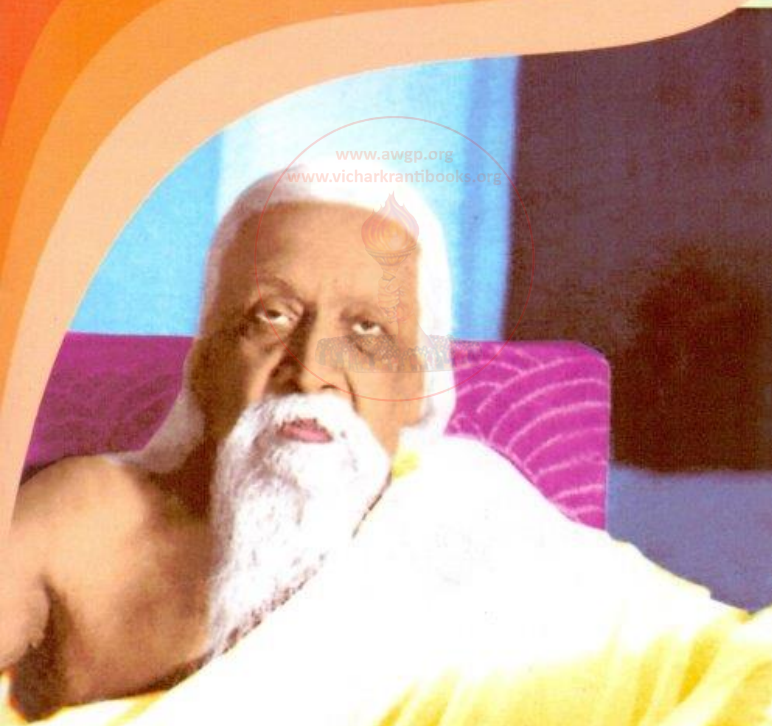

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org



नव जागरण के देवदूत— महायोगी अरविंद

कलकत्ता के सेशन जज की अदालत में 'मानिकलता बम केस' का ऐतिहासिक मुकद्मा चल रहा था। अभियुक्तों में से अधिकांश ऐसे नवयुवक थे, जिन्होंने देश को विदेशी शासन से मुक्त कराने का संकल्प लिया था और उसके लिए वे प्राण अर्पण करने को प्रस्तुत थे। ये सब युवक बड़े साहसी, उग्र और क्रांतिकारी विचारों के थे और वे अपने रक्त से हस्ताक्षर करके गुप्त-समिति के सदस्य बने थे। इस मुकदमे में उनको फाँसी और काला पानी जैसे कठोर दंडों की ही संभावना थी, तो भी न कोई भयभीत था, न अपने बचाव के लिए कोशिश कर रहा था। सब लोग ऐसे आमोद-प्रमोद के साथ जेलखाने में रहते थे जैसे किसी महोत्सव में सम्मिलित होने आये हों।

पर इन सबकी अपेक्षा अधिक निर्भय और साथ ही अधिक गंभीर तथा निश्चिंत थे—श्री 'अरविंद घोष'; जो दस वर्ष से अध्यात्ममार्ग के पथिक थे। वे राजनीतिक आंदोलन में भाग लेने के साथ ही आध्यात्मिक शक्तियों को बढ़ाने के लिए कई प्रकार के योग संबंधी अभ्यास करते रहते थे, पर जब तक वे बाहर रहे, तब तक। नौकरी और उसके बाद आंदोलन के कारण इस तरफ पूरा ध्यान देने का समय ही नहीं मिलता था। अब जेल में जा बैठने पर सब तरह के झंझटों से छूट गए और अपनी कोठरी में बैठकर समस्त मन-प्राण से भगवान् का ध्यान करने लगे। इसलिए वे अपनी जेल-यात्रा को "आश्रम-वास' कहने लगे थे। वहाँ उन्हें गहरी साधना का अवसर मिला और वे ब्रह्म-चेतना तक पहुँच गए, जो अध्यात्म-साधना का सर्वोच्च स्तर माना जाता है। कहते हैं कि जेल में प्राणायाम का अभ्यास करते समय उनका शरीर एक तरफ से हवा में ऊँचा उठ जाता था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जेल में रहते हुए ही उनकी 'ब्रह्म-भावना' इतनी बढ़ गई कि उनको सर्वत्र लीलामय प्रभु के दर्शन होने लगे। इसके पश्चात् उनके लिए जेल और जेलर, पुलिस और अदालत, अभियुक्त और जज, भगवान् के ही अनेक रूप प्रतीत होते थे। जेल जाने से पहले वे जिस आध्यात्मिक स्थिति तक पहुँचे थे, उसमें वे अपने को भगवान् के हाथ का एक यंत्र या माध्यम समझने लगे थे, पर अब तो उनको अपने चारों ओर भगवान् दिखाई देने लगा। उनकी चेतना के हर एक कोने में गीता और उसके उपदेश समा गये। जब वे जेल से बाहर निकले, तो संसार के अणु-अणु में उनको भगवान् का ही अनुभव होता था।

इस प्रकार जेल के भीतर योग साधना करने वाले श्री अरविंद सच्चे अर्थों में एक युग-पुरुष थे। एक तरफ तो वे योरोपियन भाषाओं और वहाँ के साहित्य में पारंगत थे, लैटिन, ग्रीक, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, जर्मन, इटालियन आदि कितनी ही भाषाओं में ऊँचे दर्जे की योग्यता रखते थे और दूसरी ओर भारतीय धर्म, दर्शन-शास्त्र तथा उनके विभिन्न अंगों के रहस्य के भी पूरे जानकार थे। इस प्रकार पूर्वी और पश्चिमी दोनों विद्याओं के ज्ञाता होकर वे कार्यक्षेत्र में उतरे थे। इस अगाध योग्यता के बल पर ही वे आगे चलकर साधकों के लिए 'पूर्ण योग' की साधन-प्रणाली का अनुसंधान कर सके, जिसका आश्रय लेकर भारत ही नहीं, संसार के सभी देशों के अध्यात्म प्रेमी आत्मोन्नति के उच्च शिखर की तरफ अग्रसर हो रहे हैं।

जन्म और शिक्षा—

श्री अरविंद (जन्म सन् १८७१) के पिता बंगाल के एक बहुत प्रसिद्ध डॉक्टर थे। वे सिविल सर्जन के पद पर काम करते थे। अत्यंत परोपकारी और उदार स्वभाव के थे। वे अपने रोगियों की दवा-दारू द्वारा ही सहायता नहीं करते थे, वरन् आवश्यकता जान पड़ती, तो उनके लिए पथ्य और वस्त्र की सहायता भी अपनी तरफ से करते थे। पर उनके स्वभाव में एक विशेषता यह भी थी कि वे अंग्रेजियत के कट्टर समर्थक थे। इन देश वालों की अकर्मण्यता और संकीर्ण मनोवृत्ति को देखकर वे भारतीय सभ्यता और संस्कृति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

को निस्सार समझने लगे थे, और इसलिए चाहते थे कि उनके पुत्रों को भारतीयता की हवा भी न लगे और वे पूरी तरह से अंग्रेजों के गुण-भावापन्न हो जायें। इस दृष्टि से उनकी तुलना भारत के महान् नेता पं० जवाहर लाल जी नेहरू से ही की जा सकती है, जिनको बहुत छोटी अवस्था में ही इंगलैंड भेजकर—एक अंग्रेज परिवार में रखकर शिक्षा-दीक्षा दिलाई गई थी। अपने इस विचार को पूरा करने के लिए उनके पिता किसी बंगला भाषा बोलने वाले को अपने यहाँ नौकर भी नहीं रखते थे। इस प्रकार घर में रहते हुए अरविंद और उनके भाइयों ने अंग्रेजी के सिवा भारतीय भाषाओं का एक शब्द भी नहीं सीखा।

पाँच वर्ष की आयु में ही श्री अरविंद को दार्जिलिंग के एक ऐसे स्कूल में दाखिल करा दिया गया, जो पूर्णतया योरोपियन था। इसमें पढ़ने वाले बालक और पढ़ाने वाले शिक्षक सब योरोपियन थे और भारतीय भाषाओं का कोई वहाँ नाम भी नहीं लेता था। दो वर्ष बाद सात वर्ष की अवस्था में उनको विलायत शिक्षा प्राप्त करने भेज दिया गया। कम उम्र होने के कारण उनको होस्टल में न रखकर मि० ड्रिवेट नामक गृहस्थ के घर में रहने की व्यवस्था की गई। वे महाशय योरोप की प्राचीन भाषा 'लैटिन' के, जिसका सम्मान उस महाद्वीप में हमारी संस्कृत भाषा की तरह किया जाता है, बड़े विद्वान् थे। उनके यहाँ रहकर श्री अरविंद ने छोटी अवस्था में ही इस भाषा का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर लिया। सन् १८८५ में जब मि० ड्रिवेट इंगलैंड छोड़कर ऑस्ट्रेलिया में रहने को चले गये, तो अरविंद को सेंटपाल स्कूल में दाखिल करा दिया गया। वहाँ के हैडमास्टर को इतनी छोटी आयु में इनकी लैटिन भाषा की योग्यता को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ और उनसे प्रसन्न होकर निजी तौर पर इनको दूसरी प्राचीन भाषा 'ग्रीक' पढ़ाना आरंभ कर दिया। इसको भी उन्होंने शीघ्र ही सीख लिया। योरोप की समस्त वर्तमान भाषाओं की जननी 'लैटिन' और 'ग्रीक' भाषाएँ ही मानी जाती हैं। इनका उच्च ज्ञान प्राप्त कर लेने से श्री अरविंद को वहाँ की सभी भाषाएँ सीखने में बड़ी सुविधा हो गई और वे बहुत जल्दी ऊँचे दर्जों में चढ़ा दिये गये। वास्तव में उनमें नई भाषा के सीखने की असाधारण क्षमता थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

श्री अरविंद साधारण विद्यार्थी न थे। तेरह वर्ष की आयु में जब उन्होंने मि० ड्रिवेट का घर छोड़ा, तभी अपनी विशेष प्रतिभा, समझदारी और विनम्रता से उन्होंने आदरणीय स्थान प्राप्त कर लिया था। अपनी इस विकसित योग्यता के द्वारा उन्होंने सेंटपाल स्कूल की पढ़ाई चार वर्ष में ही पूरी कर लीं और लगभग सत्रह वर्ष की आयु में कैंब्रिज के 'किंग्स कॉलेज' के लिए ८० पौंड (लगभग ५५०० रु.) की सर्वोच्च छात्र-वृत्ति प्राप्त कर ली। अंग्रेजी और फ्रांसीसी भाषाओं की विशेष योग्यता के साथ उन्होंने जर्मन, इटालियन और स्पेनिश भाषाओं का भी साधारण ज्ञान प्राप्त कर लिया। चौदह वर्ष की आयु में उन्होंने एक कविता-पुस्तक रच डाली, जिसकी अनेक विद्वानों ने प्रशंसा की। ग्रीक और लैटिन की काव्य-संबंधी योग्यता के लिए कैंब्रिज विश्व-विद्यालय में जो पुरस्कार दिये जाते थे, वे प्रतिवर्ष इन्हीं को मिलते थे।

पिता के आदेश से श्री अरविंद ने आई० सी० एस० (इंडियन सिविल सर्विस) की परीक्षा बिना किसी शिक्षक से सहायता लिए ही दे डाली और उसमें उच्च श्रेणी में पास हो गए, पर उन्होंने घुड़सवारी की ओर ध्यान नहीं दिया, जिससे परीक्षा का प्रमाण पत्र इनको न मिल सका। पर जो विद्यार्थी अन्य विषयों में अच्छी योग्यता दिखलाते थे, उनको घुड़सवारी का इम्तिहान दुबारा देने का मौका दिया जाता था, पर इन्होंने उसकी तरफ कुछ ध्यान नहीं दिया। इससे अनेक लोगों ने बाद में यह ख्याल किया कि वे इस परीक्षा में जानबूझ कर फेल हो गये, क्योंकि उनकी यह आकांक्षा नहीं थी कि भारतवर्ष में कलेक्टर या कमिश्नर बनकर अंग्रेजी नौकरशाही के एक अंग बन जाएँ। भगवान् को भी यह अभिप्रेत नहीं था कि, जिस व्यक्ति को संसार के मार्ग प्रदर्शन के लिए भेजा गया है, वह कोई बड़ा सरकारी अफसर बनकर खाने-पीने और फैशन की बातों में अपनी जिंदगी बिता दे। इसलिए उनकी विचारधारा किसी दूसरी तरफ ही बहने लग गई थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जीवन का मार्ग परिवर्तन

इस तरह सन् १८६३ तक इक्कीस वर्ष की आयु में अरविंद ने इंगलैंड के कॉलेजों की सब पढ़ाई समाप्त कर डाली। अंग्रेजी पर तो उनका ऐसा अधिकार था कि उसमें बढ़िया कविता की रचना कर डालते थे। इतना ही नहीं, लैटिन और ग्रीक भाषाओं में काव्य रचना की शक्ति भी उनको प्राप्त हो चुकी थी। पर योरोप की भाषाओं का इतना अधिक ज्ञान प्राप्त कर लेने पर भी किसी भारतीय भाषा को वे अभी तक नहीं बोल सकते थे। आई० सी० एस० की परीक्षा के लिए उनको बंगला भाषा सीखनी पड़ी थी, पर उसमें उनका ज्ञान बहुत टूटा-फूटा था, जैसा कि विदेशी लोग भारत वर्ष में आकर किसी प्रकार हिंदी बोलकर काम चला लेते हैं। उनके पिता उनको पक्का अंग्रेज बनाना चाहते थे और जन्म से अब तक वे अंग्रेजी वातावरण में ही रहे थे। उनका सोचना, विचारना, बोलना, लिखना, पढ़ना सब अंग्रेजी में ही होता था। ऐसी परिस्थिति में रहकर और अंग्रेजों के बीच में ही पलकर, कुछ वर्षों के बाद वे अंग्रेजी राज्य के घोर विरोधी और भारतीय क्रांति के प्रमुख नेता के रूप में प्रगट हुए, क्या यह एक चमत्कार नहीं था ?

दूसरी आश्चर्य की बात यह भी थी कि इक्कीस वर्ष तक यद्यपि उन्होंने योरोपियन भाषाओं तथा वहाँ के साहित्य में बहुत योग्यता प्राप्त कर ली थी, पर बाद में जिस आध्यात्मिक और दार्शनिक क्षेत्र में प्रविष्ट होकर उन्होंने विश्वव्यापी कीर्ति प्राप्त की, उसका उस समय तक कहीं चिह्न भी नहीं था। उस समय उन्होंने दार्शनिक विषयों से संबंधित केवल दो-एक पुस्तकें प्लेटो की पढ़ी थीं। इन सब विषयों का अध्ययन उन्होंने भारतवर्ष आकर ही किया और तभी संस्कृत भाषा को भी सीखा।

जैसा हम आरंभ में बतला चुके हैं कि अरविंद के पिता अन्य लोगों की तरह पूजा-पाठ करने वाले धार्मिक व्यक्ति नहीं थे, पर दया, परोपकार उदारता की दृष्टि से वे बहुत उच्च कोटि के व्यक्ति थे, इन कार्यों में वे इतना अधिक खर्च कर डालते थे कि कभी-कभी अपने लड़कों की पढ़ाई के लिए खर्च भेजने में भी असमर्थ हो जाते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसके कारण तीनों भाइयों को अनेक बार बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता था। अरविंद और उनके दोनों भाई अक्सर जाड़ों में बिना कोट के रह जाते और कभी-कभी उन्हें पूरे भोजन से भी वंचित रहना पड़ता था। उस समय वे पाव रोटी, चाय और कुछ सूखी चीजें खाकर ही काम चलाते थे।

अंतिम दिनों में श्री अरविंद का संपर्क कुछ ऐसे भारतीय युवकों से हो गया, जिन पर योरोप के क्रांतिकारी विचारों का प्रभाव पड़ चुका था और इसीलिए उनको अपने देश की पराधीन अवस्था खटकने लगी थी। इनमें से कुछ युवक जो बहुत गर्म विचारों के थे। वे अपने सिद्धांतों के अनुसार उसी समय कोई कार्य आरंभ करने पर जोर देने लगे, फलस्वरूप लंदन में ही एक संस्था की स्थापना की गई, जिसका नाम 'लोटस एंड डैगर" (कमल और कटार) था। इसके प्रत्येक सदस्य को इस बात की प्रतीज्ञा करनी पड़ती थी कि—वह कोई ऐसा कार्य करेगा, जिससे भारत में ब्रिटिश शासन समाप्त हो सके। पर यह सभा कोई क्रियात्मक कदम न उठा सकी, यद्यपि उसके श्री अरविंद जैसे सदस्यों ने व्यक्तिगत रूप से उस शपथ को अच्छी तरह पूरा करके दिखा दिया।

जिस समय अरविंद अपना अध्ययन समाप्त करके भारत लौटने की तैयारी कर रहे थे, उसी समय अपने आप उनके लिए जीविकोपार्जन की व्यवस्था भी हो गई । बड़ौदा के महाराज सयाजीराव उन दिनों लंदन गये हुए थे। वहाँ पर सुप्रसिद्ध भारत हितैषी सर हेनरी काटन के भाई श्री जेम्स काटन से बातचीत होने पर जब उनको यह ज्ञात हुआ कि अरविंद नाम का एक बड़ा प्रतिभाशाली और कर्मठ युवक उनके यहाँ कार्य करने को मिल सकता है, तो वे बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने उसी समय श्री अरविंद को बुलाकर सब बातें तय कर ली और उनको राज्य में एक अच्छी जगह दे दी। फरवरी १८६३ में वे इंगलैंड से रवाना होकर बड़ौदा में आकर रहने लगे। यहीं से उनके जीवन का दूसरा अध्याय आरंभ होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सार्वजनिक जीवन की तैयारी—

बड़ौदा में दो-तीन सरकारी पदों पर काम करने के पश्चात् उनको वहाँ के कॉलेज में फ्रांसीसी भाषा का प्रोफेसर बना दिया गया। कॉलेज में भी वे निरंतर उन्नति करते गये और सन् १९०६ में राजनैतिक कार्य करने के लिए जब उन्होंने कॉलेज को छोड़ा, तो वे 'वाइस प्रिंसिपल' के पद पर काम कर रहे थे। उन्हें उस समय ७५० रु० मासिक वेतन मिलता था, जो आज लगभग चालीस हजार रुपये के बराबर है।

बड़ौदा में श्री अरविंद ने जो तेरह वर्ष व्यतीत किये, उन्हें हम उनके भावी कार्यक्रम—राजनीतिक, आध्यात्मिक और योग की तैयारी का समय मान सकते हैं। सबसे पहले वे दार्शनिक और आध्यात्मिक विषयों की ओर झुके। भारत के प्राचीन साहित्य का अवलोकन करके उन्होंने यह समझ लिया कि—यह देश वास्तव में एक ऐसी महान् संस्कृति का उत्तराधिकारी हैं, जिसकी तुलना संसार में अन्यत्र मिल सकनी असंभव है। पर साथ ही यहाँ की लज्जाजनक पराधीनता और करोड़ों लोगों की भीषण गरीबी को देखकर उनको खेद भी कम नहीं होता था। वास्तव में अपने देश और समाज की तत्कालीन हीनावस्था में प्राचीन संस्कृति पर गर्व करना हास्यास्पद है। भारतवासियों के जीवन में से प्राचीनकाल के उत्तम गुणों का तो लोप हो गया और उनका स्थान अनेक मूढ़ताजनित कुसंस्कारों, हानिकारक रूढ़ियों ने ले लिया। इसलिए भारत के उद्धार की आकांक्षा करने वाले किसी भी व्यक्ति का प्रथम कर्तव्य यह था कि वह सबसे पहले समाज के भीतर जमा हो जाने वाले इस कूड़ा-कर्कट की सफाई कर डाले।

श्री अरविंद ने इस तथ्य को भली-भाँति हृदयंगम किया, पर उनको यह भी अनुभव हुआ कि, समाज की सफाई का कार्य आरंभ करने से पहले हमको अपनी सफाई कर डालनी चाहिए। भारतवर्ष एक धर्मप्रधान देश है, यहाँ की अशिक्षित जनता भी, गलत या सही ढंग से धार्मिक भावों से ही संचालित होती है। इसलिए उसका सुधार-उत्थान करने वाले को पहले आध्यात्मिक दृष्टि से स्वयं अपने को कुछ योग्य बना लेना चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह निश्चय कर लेने पर उन्होंने सबसे पहले भारतीय भाषाओं को सीखने की तरफ ध्यान दिया। अभी तक उनको अपनी मातृभाषा बंगला का भी ठीक अभ्यास नहीं था। इसीलिए उन्होंने एक बंगाली विद्वान् को शिक्षक के रूप में बुलाया। साथ ही मराठी और गुजराती का अभ्यास भी करने लगे, क्योंकि बड़ौदा राज्य में इन्हीं दोनों का प्रयोग किया जाता था। धार्मिक साहित्य का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उन्होंने संस्कृत सीखी और धीरे-धीरे उसमें इतनी उन्नति की कि वे वेद और उपनिषदों की व्याख्या भी करने लग गए।

इस प्रकार योरोप की उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद भारत में भी वे अपना जीवन एक विद्यार्थी की ही तरह व्यतीत करते रहे। रात में भी बड़ी देर तक मिट्टी के तेल के लैंप से ही पढ़ते रहते थे। वैसे भी उनकी जीवनचर्या अत्यंत साधारण थी। वे लोहे की चारपाई पर सोते थे और बहुत बार जाड़े में भी रजाई नहीं रखते थे। उनका भोजन भी साधुओं की तरह अत्यंत सादा और आडंबर-रहित होता था। उनको अगर कोई धुन या व्यसन था, तो वह पढ़ने का ही था, जिससे उनका ज्ञान-भंडार निरंतर बढ़ता जाता था।

अब उनके राजनीतिक विचारों में भी परिवर्तन हो रहा था। बचपन से ही अंग्रेजों के मध्य में रहने और अपनी पूरी शिक्षा अंग्रेज शिक्षकों द्वारा ग्रहण करेने के कारण वे अब तक योरोपियन सभ्यता को आदर की दृष्टि से देखते थे और कभी उस पर आक्षेप या व्यंग नहीं करते थे। पर भारत में आकर यहाँ की पराधीनता तथा अंग्रेजों के अहम्मन्यतापूर्ण व्यवहार को देखकर उनमें जातीयता का भाव बढ़ने लगा और वे उग्र शब्दों में विदेशी शासन की आलोचना करने लगे। उसी समय उन्होंने बंबई के 'इंदु-प्रकाश' पत्र में 'पुराने की जगह नये चिराग' शीर्षक लेखमाला प्रकाशित कराई थी, जिसमें उन राजनीतिज्ञों की कठोर आलोचना की गई थी, जो अंग्रेजों की खुशामद करके कुछ अधिकार प्राप्त करने की चेष्टा किया करते थे।

सन् १९०१ में उनका विवाह राँची (बिहार) के निवासी श्री भूपालचंद्र की कन्या मृणालिनी देवी से हो गया। यद्यपि अपनी पत्नी के साथ श्री अरविंद का व्यवहार सदैव प्रेम पूर्ण रहा, पर ऐसे असाधारण व्यक्तित्व वाले महापुरुष की सहधर्मिणी होने से उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सांसारिक दृष्टि से कभी इच्छानुसार सुख की प्राप्ति नहीं हुई। प्रथम तो राजनीतिक जीवन की हलचल के कारण उसे पति के साथ रहने का अवसर ही कम मिल सका, फिर आर्थिक दृष्टि से भी श्री अरविंद का जीवन जैसा सीधा-सादा था, उसमें उसे कभी वैभवपूर्ण जीवन के अनुभव करने का अवसर नहीं मिला, केवल जब तक वे बड़ौदा में रहे, वह कभी-कभी उनके साथ सुखपूर्वक रह सकी। फिर जब वे पांडिचेरी में जाकर रहने लगे, तो उनकी बढ़ी हुई योग-साधना की दृष्टि से पत्नी का साथ रहना निरापद नहीं था तो भी कर्तव्य-भावना से उन्होंने उसे पांडिचेरी आने को कह दिया। पर उसी अवसर पर इन्फ्लुऐंजा की महामारी के आक्रमण से उनका देहावसान हो गया।

बड़ौदा में रहते समय ही श्री अरविंद का संबंध क्रांतिकारी दल से हो गया था। वास्तव में इस दल के सूत्रधार और प्रमुख कार्यकर्ता उनके छोटे भाई वारींद्र ही थे। श्री अरविंद यद्यपि इसमें सक्रिय भाग नहीं लेते थे, पर सम्मति और सहायता उनसे सदैव मिलती रहती थी। इसके साथ ही उनका जीवन अध्यात्म की तरफ भी अग्रसर हो रहा था। यद्यपि उस जमाने की दृष्टि से वे पर्याप्त वेतन पाते थे, जिसमें अमीरों की तरह रह सकते थे, पर इस तरफ उन्होंने कभी ध्यान ही नहीं दिया। उनका रहन-सहन बहुत सादा था, पर दूसरों के लिए खर्च करते रहने के कारण महीने के अंत में उनके पास एक पाई भी नहीं बचती थी। कभी-कभी तो ऐसी हालत हो जाती थी कि वे अपनी पत्नी को—जो प्रायः देवधर (बिहार) में रहती थी, खर्च भेजने में भी चूक जाते थे। इस संबंध में श्री दीनेंद्रकुमार ने, जो शिक्षक के रूप में उनके साथ एक वर्ष तक रहे थे, लिखा है—

"श्री अरविंद कोई सांसारिक जीव नहीं थे, वे तो कोई देवता थे, जो भटक कर भूमंडल पर आ गये थे। उनके चेहरे पर एक भाव था, बाल लंबे थे और आँखें अर्द्ध-उन्मीलित-सी लगती थीं। फैशनेबिल कपड़े न पहनकर वे देशी कपड़े की एक मिरजई पहिनते थे, उनकी कोई आकांक्षा नहीं थी। ख्याति से बचते थे, बातचीत बहुत कम करते थे, आत्म-संयम का पालन करते थे और केवल अध्ययन ही उनका मुख्य कार्य था।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

योगाभ्यास की प्रगति—

यद्यपि श्री अरविंद को अध्यात्म तथा योग की आंतरिक प्रेरणा बड़ौदा आने से पहले भी प्राप्त होती रहती थी, पर उस समय वे साहित्य और काव्य के प्रवाह में विशेष रूप से बह रहे थे। इसलिए उस समय उन्होंने अध्यात्म पर विचार नहीं किया। भारतवर्ष आकर जब उन्होंने यहाँ के प्राचीन साहित्य का अध्ययन किया, तो उनका झुकाव स्वयमेव इधर होने लगा। पर योगाभ्यास का आरंभ बिना गुरु के नहीं किया जा सकता। यद्यपि उन्होंने उस समय बाकायदा कोई गुरु तो नहीं बनाया, पर उनकी कई उच्च श्रेणी के पथ प्रदर्शक मिल गये। नर्मदा तट के चोंदोद स्थान में प्रतिष्ठित गंगा-मठ के सद्गुरु ब्रह्मानंद ने दर्शन देकर श्री अरविंद के लिए योग-मार्ग को प्रशस्त किया। यह बात प्रसिद्ध थी कि ये महात्मा किसी की आँखों की तरफ नहीं देखते थे, पर श्री अरविंद को अधिकारी समझकर, उन्होंने इनकी ओर देखा ही नहीं, वरन् सफलता के लिए शुभाशीर्वाद भी दिया। यह भी कहा जाता है कि ब्रह्मानंद के एक शिष्य ने ही इनको सर्वप्रथम प्राणयाम की शिक्षा दी। सन् १९०४ में ये प्राणायाम और धारणा का अभ्यास करने लगे और क्रमशः इसमें कई घंटे तक लगाने लगे। तीन वर्ष पश्चात् उन्होंने ग्वालियर के श्री लेले को अपना सहायक बनाया और इससे योग-मार्ग में अच्छी प्रगति हुई। इन सबके साथ उनके भीतर एक ऐसी शक्ति काम कर रही थी, जिसकी सहायता से वे योग-संबंधी बहुत विषयों की जानकारी स्वयं ही प्राप्त कर लेते थे।

क्रांतिकारी आंदोलन में सहयोग—

क्रांतिकारी दल का संगठन और संचालन यद्यपि श्री अरविंद की आध्यात्मिक प्रकृति के विशेष अनुकूल तो नहीं था, तो भी आरंभिक काल में उन्होंने इसमें महत्त्वपूर्ण योग दिया। इस संबंध में यह जान लेना आवश्यक है कि उन्होंने कभी शस्त्रास्त्र की शिक्षा, बम बनाना, हथियार जमा करने के कामों को स्वयं नहीं किया। आंदोलन का यह विभाग तो श्री वारींद्र के जिम्मे था और उसने इसके लिए कुछ साथी भी बना लिए थे। श्री अरविंद तो इस कार्य में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भाग लेने वाले युवकों को प्रेरणा दिया करते थे और आवश्यक होने पर मार्ग-दर्शन करते थे। जब छुट्टी मिलती तो बंगाल के विभिन्न स्थानों का दौरा करके ऐसे लोगों से संपर्क स्थापित करते, जिनसे इस कार्यक्रम में सहायता मिल सकती थी। उन्होंने महाराष्ट्रीय क्रांतिकारियों से भी संपर्क स्थापित कर लिया था। यह एक अनोखी बात हुई कि श्री अरविंद के नाना ऋषि राजनारायण बोस जैसे धार्मिक वयोवृद्ध सज्जन इस आंदोलन से प्रभावित हो उठे। नवयुवक रवींद्रनाथ ठाकुर ने भी क्रांतिकारी दल की शपथ ग्रहण की। योगेन मुखर्जी और चारुचंद्र दत्त जैसे ऊँचे दर्जे के मजिस्ट्रेट और आई० सी० एस० अफसरों ने इस कार्य में सहयोग प्रदान किया। सिस्टर निवेदिता, जो स्वयं अंग्रेज थी, भारतवासियों से सहानुभूति रखने के कारण इस आंदोलन में सहायता पहुँचाने लगीं। बड़ौदा के एक सरदार श्री केशवराव जाधव के भतीजे श्री माधवराव को सैनिक शिक्षा प्राप्त करने तथा बम और रिवाल्वर का ठीक प्रयोग सीखने के लिए इंगलैंड भेजा गया। श्री अरविंद ने इसके लिए कुछ आर्थिक सहायता भी दी थी। इस प्रकार उन्होंने भारतवर्ष को पराधीनता के बंधनों से छुड़ाने वाले आंदोलन को अग्रसर बनाकर मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्य का पालन किया। उस समय वे भारतीय क्रांतिकारियों के एक प्रमुख संचालक थे। पर जब वे खुले तौर पर राजनीतिक आंदोलन में भाग लेने लगे तो आतंकवादी दल से उनका संबंध बहुत कम हो गया।

राजनीतिक संघर्ष का युग—

सन् १९०५ का जमाना आया और लार्ड कर्जन ने बंगाल को दो टुकड़ों में बाँट दिया, तो देश में एक भयंकर राजनीतिक तूफान उत्पन्न हो गया। इसके फल से भारत के कोने-कोने में एक जोरदार आंदोलन छिड़ गया, जिसका केंद्र बंगाल था। लोगों ने विदेशी माल का बहिष्कार करके विलायती कपड़ों की होली जलाई। हजारों विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल कॉलेज छोड़कर स्वदेश प्रचार का कार्य आरंभ कर दिया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उस समय भी देश की सबसे बड़ी राजनैतिक संस्था कांग्रेस ही थी। पर उसमें नरम दल वालों की प्रधानता थी, जो सरकार से प्रार्थना करने के सिवाय किसी सीधी कार्यवाही के लिए उद्यत नहीं थे। इधर लोकमान्य तिलक, लाला लाजपत राय, श्री विपिनचंद्र पाल आदि गर्म दल के नेता सरकार के सामने स्वराज्य की माँग को बलपूर्वक रखने के पक्ष में थे। श्री अरविंद भी इसी दल में थे, पर बड़ौदा में सरकारी नौकरी के कारण अभी इस आंदोलन में अप्रत्यक्ष रूप से ही भाग ले रहे थे, खुलकर मैदान में नहीं कूदे थे। जब आंदोलन बढ़ने लगा और लो० तिलक से उनका घनिष्ट संबंध स्थापित हो गया, तो उन्होंने एक वर्ष की छुट्टी लेकर बड़ौदा कॉलेज से संबंध विच्छेद कर लिया। इसके पश्चात् उन्होंने कलकत्ते के नवस्थापित 'नेशनल कॉलेज' में नाम मात्र के लिये ५५० रु० वेतन लेकर विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा की शिक्षा देने का भार अपने ऊपर ले लिया।

राजनीतिक आंदोलन की सफलता और देशवासियों तक स्वाधीनता का संदेश पहुँचाने के लिये, 'वंदेमातरम्' नामक एक दैनिक-पत्र निकाला गया, जिसका आर्थिक और संपादकीय भार श्री अरविंद के ही ऊपर था। इनके तेजस्वी और युवकों को आकर्षित करने वाले लेखों से सरकार डर गई और ऐसा अवसर ढूँढने लगी, जिससे इनको हटाया जा सके। शीघ्र ही इन पर दो मुकदमे चलाये गए, जो युगांतर और वंदेमातरम् में प्रकाशित लेखों के संबंध में थे। युगांतर के लेख को तो श्री भूपेंद्रनाथ दत्त ने जो स्वामी विवेकानंद के छोटे भाई थे, अपना लिखा बतलाया, जिससे उनको सजा हो गई। 'वंदेमातरम्' वाले अभियोग में सरकार यह सिद्ध नहीं कर सकी कि वे लेख श्री अरविंद के लिखे हैं, इसलिए मजिस्ट्रेट ने उनको बरी कर दिया।

इस मुकदमे के कारण 'वंदेमातरम्' और श्री अरविंद का नाम देश भर में फैल गया और लोग उनको पूज्य-भाव से देखने लगे, उधर सरकार को भी अपनी हार में कुछ अनुभव हो गया। इनके लेख वास्तव में ऐसे उच्च भावों से युक्त होते थे कि उनकी घृणा फैलाने वाला या हिंसा के लिए उत्तेजना देने वाला सिद्ध नहीं किया जा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकता था। उनके लेखों का वातावरण आध्यात्मिक रहता था और वे कर्तव्यपालन के रूप में भारतमाता की वेदी पर सर्वस्व न्यौछावर कर देने का उपदेश देते थे। वे कहते थे कि विदेशी हुकूमत अच्छी हो तो भी अपने शासन-स्वराज्य की समता नहीं कर सकती। इन लेखों को पढ़कर अंग्रेजों के प्रमुख पत्र 'स्टेट्समैन' ने लिखा था—"वंदेमातरम्" में प्रकाशित लेख यद्यपि राजद्रोह से भरे रहते हैं, पर उनके खिलाफ कानूनी कार्यवाही नहीं की जा सकती। उसके लेख की चतुरता और अंग्रेजी भाषा के प्रयोग का कौशल वास्तव में प्रशंसनीय है।"

इसी समय सूरत कांग्रेस की तैयारी होने लगी। पिछले काशी और कलकत्ता के अधिवेशनों में देश के कुछ वयोवृद्ध नेताओं ने गर्म और नर्म दल वालों को समझा-बुझाकर कांग्रेस में सम्मिलित कर रखा था, पर अब सरकारी दमन के कारण देश में बड़ी उत्तेजना फैल गई थी। इससे लोग कांग्रेस के ध्येय को बदलकर नई परिस्थिति के अनुकूल बनाने पर जोर दे रहे थे। पर नर्म दल वाले इसके विरोधी थे और कांग्रेस को पुराने ढर्रे पर ही चलाना चाहते थे। इस पर दोनों पक्षों में संघर्ष हो गया। जूते-लात तक की नौबत आकर अधिवेशन भंग हो गया। श्री अरविंद इस अवसर पर गर्म दल के मुखिया लो० तिलक के प्रधान सहयोगी थे। उनकी अध्यक्षता में गर्म दल वालों की एक विशाल सभा पृथक् की गई, जिसमें हजारों व्यक्तियों ने अपना सर्वस्व देश पर बलिदान करने की प्रतिज्ञा की।

गिरफ्तारी और कारागारवास—

अब श्री अरविंद स्वतंत्रता के संदेश का नगर-नगर में प्रचार करने लगे। कलकत्ता वापस आने पर उनका बहुत धूमधाम से स्वागत किया गया। इन दिनों भाषण देते समय वे आँखें बंद करके सोच-विचार करना छोड़ देते थे और जो कुछ आवाज स्वभावतः आत्मा में से निकलती थी, उसी को श्रोताओं के सामने प्रकट कर देते थे। ये भावनाएँ ऐसी होती थीं जैसे 'डायनमो' चलने से विद्युत्-धारा की उत्पत्ति होती है। श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाते थे और उन पर सनसनी भरा प्रभाव पड़ता था। उनको ऐसा जान पड़ता था

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कि वे किसी राजनैतिक नेता का नहीं, वरन् किसी प्राचीन ऋषि या देवदूत का उपदेश सुन रहे हैं।

देश में चारों ओर उत्तेजना के वातावरण की वृद्धि और जनता में राजद्रोही भावों का प्रसार होते देखकर सरकार ने जबर्दस्त दमन करके इस आंदोलन को कुचल डालने का निश्चय कर लिया। 'वंदेमातरम्' कहने पर अनेक बालक पीटे जाने लगे, स्वदेशी वस्त्र धारण करने वालों को चाहे जब अपमानित किया जाने लगा। ऐसी घटनाओं से आतंकवादी नवयुवकों को जोश आ गया और उन्होंने एक अंग्रेज जज की गाड़ी पर बम फेंक दिया। फेंकने में कुछ भूल हो गई, जिससे जज के बजाय दो अन्य व्यक्ति मारे गये। इस घटना से देश भर में तहलका मच गया और पुलिस राजनीतिक कार्यकर्ताओं के पीछे पड़ गई। वारींद्र का बम का कारखाना पकड़ा गया और उससे किसी प्रकार का संबंध न होते हुए भी श्री अरविंद को भी गिरफ्तार करके रस्सी से बाँधकर हवालात में पहुँचा दिया गया। उनके साथ इस तरह का अपमानजनक व्यवहार करने का विरोध प्रदेश के अधिकांश गण्यमान्य व्यक्तियों ने किया और सरकार की निंदा की।

यह मुकदमा पूरे एक वर्ष तक चलता रहा। श्री अरविंद जैसे विश्व-विख्यात विद्वान् और आध्यात्मिक व्यक्ति के इसमें अभियुक्त होने से उसका महत्त्व और भी बढ़ गया। सरकार की तरफ से इस बात की बेहद कोशिश की गई कि उनको दोषी सिद्ध करके सजा दे दी जाए। इसलिए सरकारी बैरिस्टर नार्टन ने अदालत में श्री अरविंद के विरुद्ध बहुत-सा दोषारोपण किया, पर वे स्वयं इस विषय में बिल्कुल उदासीन रहे। उन्होंने आंतरिक प्रेरणा से इसका पूरा-पूरा भार एक नवयुवक वकील चितरंजनदास—जो बाद में सी० आर० दास के नाम से देश के एक महान् नेता के रूप में प्रसिद्ध हुए, के ऊपर छोड़ दिया था और स्वयं अपना अधिकांश समय योग-साधना में लगाते रहे।

अंत में मुकदमे की कार्यवाही समाप्त हुई और श्री अरविंद की तरफ से श्री चितरंजन ने जज को संबोधन करते हुए अपनी बहस के अंत में कहा—"आपसे मेरी अपील है कि एक लंबे समय के बाद जब

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

यह विवाद शांत हो जायेगा और यह कष्टकर परिश्रम और आंदोलन बंद हो जायेगा तथा अभियुक्त की जीवन-लीला भी समाप्त हो जायेगी, तब इनकी पूजा एक देशभक्त कवि के रूप में होगी। इनका सम्मान एक राष्ट्रदूत और मानवता के प्रेमी के रूप में होगा और जब इनका अवसान हुए बहुत दिन हो जायेंगे, तब इनके शब्द न केवल भारत में ध्वनित होंगे, बल्कि दूर के देशों और समुद्र पार तक गूँजते रहेंगे। इसलिए मेरा निवेदन है कि आज ऐसे ऊँचे दर्जे का व्यक्ति न सिर्फ अदालत के सामने, बल्कि इतिहास के सर्वोच्च न्यायालय के सामने खड़ा है, इस तथ्य को दृष्टिगोचर रखकर न्यायाधीश को सच्चा न्याय करना चाहिए।" कहना न होगा—इन शब्दों का प्रभाव जज की अंतरात्मा पर हुआ। जज ने श्री अरविंद को 'बेकसूर' बतलाया और उनको मुक्त कर दिया। शेष ३४ अभियुक्तों को आजन्म काले पानी से लेकर लंबी कैद की सजाएँ दी गई।

राजनीति का त्याग और अध्यात्म का प्रचार—

अभियोग समाप्त होने पर जब श्री अरविंद जेल से बाहर आये, तो उन्होंने देखा कि देश की दशा बिल्कुल बदल गई है। सरकार ने भारी दमन-चक्र चलाकर बोलने, लिखने, प्रचार करने पर रोक लगा दी थी और सभी मुख्य नेताओं को जेल में बंद कर दिया था। 'वंदेमातरम्' का प्रकाशन भी बंद हो गया था। इसलिए उन्होंने अपने विचारों के प्रकाशन के लिए अंग्रेजी में 'कर्मयोगिन्' और बंगला में 'धर्म' नामक साप्ताहिक-पत्र प्रकाशित करने आरंभ किए। इन पत्रों में वे राजनीति तथा अध्यात्म का समन्वय करके बहुत ऊँचे रूप में प्रकट करते थे। उन्होंने लिखा—"कर्मयोग और धर्म ही मानव-जीवन का सार है, वही सच्ची राजनीति है और वही गीता का उपदेश है।" यद्यपि देश की अवस्था और आवश्यकता को समझकर उनको राजनीति पर विचार करना पड़ता था, पर वे छोटे-बड़े सभी विषयों में आध्यात्मिकता का ध्यान रखना आवश्यक समझते थे। वह धर्म और अध्यात्म से शून्य राजनीति को मानवता के लिए अकल्याणकारी मानते थे, क्योंकि उसका अंतिम परिणाम कलह, संघर्ष और शत्रुता में ही निकलता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शिक्षा में भी वे अध्यात्म का प्रवेश अनिवार्य मानते थे। उन्होंने योरोप की ऊँची से ऊँची शिक्षा को प्राप्त करके देख लिया था कि उसकी नींव भौतिकता पर रखी है, इसलिए सांसारिक दृष्टि से वैभव और चमक-दमक प्राप्त कर लेने पर भी उसमें शाश्वत कल्याण और शांति प्रदान करने की शक्ति नहीं है। उसके कारण संसार में स्वार्थयुक्त संघर्ष की सृष्टि होती है और मनुष्य ऊँचे धरातल पर पहुँचने के बजाय साधारण श्रेणी की सफलताओं में ही लिप्त रहता है। इसके विपरीत भारत की प्राचीन शिक्षा-प्रणाली का लक्ष्य ब्रह्मचर्य और योग द्वारा आध्यात्मिक उच्चता को प्राप्त करना बताया गया था। इसी के प्रभाव से उस समय भारतवर्ष इतनी उच्च पदवी को पहुँच गया था कि कोई अन्य देश उसकी समता नहीं कर सकता था। श्री अरविंद ने भी वर्तमान शिक्षा प्रणाली को उसी ओर मोड़ने की सलाह दी। उन्होंने प्राचीन भावनाओं को आधुनिक परिस्थितियों के अनुकूल रूप में परिवर्तित करके कार्यान्वित करने पर जोर दिया।

श्री अरविंद का विश्वास था कि अंतरात्मा की सत्ता सर्वव्यापी है और जड़-जगत् के पदार्थ भी उससे पृथक् नहीं हैं। इसलिए वे यह नहीं कहते थे कि प्राचीन काल की तरह कुश के आसन पर बैठकर पढ़ना ही धर्मानुकूल है और कुर्सी-मेज पर बैठकर पढ़ना-लिखना अधोगति का कारण है। उनके मतानुसार आत्म-शक्ति ही सर्वप्रधान है और वही प्रत्येक पदार्थ को भले या बुरे रूप में अनुप्रणित कर सकती है। उन्होंने 'कर्मयोगिन्' में लिखा था—केवल अंतरात्मा ही हमें बचा सकती है। हम अपने हृदय को महान् और स्वतंत्र बनाकर ही सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से बड़े और स्वाधीन बन सकते हैं। जब भारत अपनी खोई हुई जातीयता प्राप्त कर लेगा, तो वह संसार में मानव परिवार में अधिक पूर्ण और विशाल जीवन का अधिकारी बन सकेगा।"

आत्मा की पुकार—

पर इन सब कार्यों को करते और राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेते हुए भी उनकी अंतरात्मा उनको एकांतवास में रहकर आध्यात्मिक साधना के लिए प्रेरित कर रही थी। कलकत्ता में रहकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनको बहुत-सा समय राजनीतिक उलझनों के समाधान में लगाना पड़ता था और अनेक समय नवीन परिस्थितियों के उत्पन्न हो जाने से व्यस्ततापूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता था। इससे उच्च आध्यात्मिक साधना में व्याघात पड़ता था और लक्ष्य-प्राप्ति में विलंब होता था। अंत में उन्होंने यही निश्चय किया कि राजनीतिक आंदोलन से संपर्क त्यागकर किसी ऐसे स्थान में जाकर निवास करें, जो साधना के लिए विशेष रूप से अनुकूल हो। यह निश्चय करके उन्होंने देशवासियों के नाम एक खुली चिट्ठी प्रकाशित कराई, जिसे वे अपना 'अंतिम राजनीतिक मृत्यु-लेख अथवा वसीयत नामा' कहते थे। इसमें उन्होंने अपने हटने का संकेत करते हुए अनुयायियों को आश्वासन दिया कि "हर बड़े आंदोलन को इस बात की बाट देखनी पड़ती है कि भगवान् उसके लिए विशेष रूप से उपयुक्त नेता को भेंजे। वह नेता भगवान् की शक्ति का माध्यम बन जाता है। तब वह आंदोलन विजयोल्लास के साथ सफलता की ओर बढ़ता है।" श्री अरविंद का आशय यही था कि यद्यपि वे इन दिनों परिस्थितिवश आंदोलन का संचालन कर रहे हैं, पर वास्तव में उनका क्षेत्र दूसरा है। वे पहले स्वयं उस योग-मार्ग की खोज करेंगे, जो मानव को महा-मानव (सुपरमैन) बना सकता है और फिर अपने अन्य देशवासियों को भी उसी पर चलने में सहायता करेंगे। राजनीतिक आंदोलन की सफलता के लिए भगवान् किसी दूसरे ही नेता को भेजेगा।"

इस प्रकार अपने एकांतवास के इरादे को सार्वजनिक रूप से प्रकट करके पहले तो वे चंद्रनगर चले गये और बाद में पांडिचेरी जाकर साधना करने लगे। इस स्थान को चुनने का कारण यह था कि यह फ्रांसीसियों के शासन में था और यहाँ वे अंग्रेजी सरकार और पुलिस की निरंतर छेड़खानी से निश्चिंत रहकर आध्यात्मिक साधना में संलग्न हो सकते थे।

इस संबंध में बाद में कुछ अंग्रेजी अफसरों ने अपनी तुच्छ मनोवृत्ति का परिचय देते हुए यह आरोप लगाया कि श्री अरविंद गिरफ्तारी के डर से भारत की सीमा के बाहर भाग गये। इसका उत्तर देते हुए उन्होंने 'मद्रास टाइम्स' नामक पत्र में लिखा कि वे उच्च योग की साधना के लिए पांडिचेरी में आकर रहने लगे हैं और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जिस वारंट के कारण भागने की बात कही जाती है, वह उनके पांडिचेरी पहुँचने के बाद निकाला गया है। इसके अतिरिक्त वह वारंट कुछ दिनों बाद खुद ही खारिज हो गया। जिस "खुली चिठ्ठी' के आधार पर वह निकाला गया था, उसके मुद्रक को गिरफ्तार करके सरकार ने मुकदमा चलाया था। नीचे की अदालत में तो उसे कुछ सजा दे दी गई, पर हाईकोर्ट में अपील करने पर उसे बरी कर दिया गया और जजों ने कहा कि श्री अरविंद की खुली चिट्ठी में राजद्रोह की कोई बात नहीं है।

पांडिचेरी में आरंभिक जीवन—

पांडिचेरी पहुँचने पर भी अरविंद पूर्णतः प्रकट रूप से नहीं रहते थे, केवल उनके कुछ घनिष्ठ परिचितों को ही उनकी जानकारी थी, वहाँ के भारतीय राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने उनसे अनुरोध किया कि उनके कार्य में सहयोग करें, परंतु अब वे योग साधना में तल्लीन हो चुके थे इसलिए इस विषय में उन्होंने सब मित्रों से क्षमा माँग ली। आरंभ में उनको शंकर चेट्टी के घर पर ठहराया गया, जहाँ पहले स्वामी विवेकानंद भी ठहर चुके थे, यहाँ श्री अरविंद का जीवन अत्यंत सादा था। वे और उनके तीन साथी फर्श पर ही सोते थे और गृह स्वामी के यहाँ जो चावल, शाक और मद्रासी 'रसम्' बनता था, उसी को नियमित रूप से खाते थे। चूँकि गृहस्वामी शाकाहारी था इसलिए बंगालियों का नियमित भोजन मछली उन्होंने त्याग दिया था। ये अपना सब काम अपने हाथ से ही करते थे। सन् १९१४ में जब आर्य का प्रकाशन हुआ, तब एक नौकर रखा गया।

मीरा रिचार्ड का आगमन—

इसी वर्ष फ्रांस के विद्वान् दार्शनिक पाल रिचार्ड पांडिचेरी आकर इनसे मिले। इस भेंट से उनको, यह अनुभव हुआ कि, श्री अरविंद उनके बड़े भाई के समान हैं और उनका ज्ञान भंडार बहुत विशाल है। पाल रिचार्ड की पत्नी छोटी उम्र से ही योग-साधना करती थी। उसने अपने पति द्वारा अरविंद से योग संबंधी प्रश्न पूछे थे और एक बात यह भी जानना चाही थी कि, स्वप्न में कमल के दर्शन का क्या विशेष अर्थ होता है ? श्री अरविंद ने बतलाया कि,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कमल के स्वप्न का आशय अंतर्चेतना के जागरण से है और जब साधक का मन सूक्ष्म स्तर पर पहुँच जाता है, प्रायः तब यह दिखलाई दिया करता है।

इसके कुछ ही समय बाद मीरा रिचार्ड स्वयं पांडिचेरी आकर श्री अरविंद से मिली। दूसरे दिन इस भेंट का वर्णन करते हुए उन्होंने अपनी डायरी में लिखा—"जिसके दर्शन हमने कल किए, वह धरातल पर विराजमान है और उसकी उपस्थिति इस बात को साबित करने को काफी है कि एक दिन ऐसा अवश्य आयेगा, जबकि अंधकार प्रकाश के रूप में बदल जायेगा और पृथ्वी पर सचमुच भगवान् का राज्य स्थापित हो जायेगा।" यहाँ यह कर देना अप्रासंगिक न होगा कि इसके कुछ ही समय बाद मीरा रिचार्ड श्री अरविंद की साधना में प्रधान सहायिका हो गईं और वे 'माताजी' के नाम से 'अरविंद आश्रम' का संचालन करती रहीं।

सन् १९१४ में ही एक विशेष घटना कोडयारम् (मद्रास) के जमींदार श्री के० पी० रंगस्वामी का श्री अरविंद का शिष्य बन जाना भी था। उनके कुलगुरु योग नगाई जाप्ता ने कुछ समय पूर्व अध्यात्मविद्या के आधार पर यह बताया था कि—"उत्तर भारत से एक महायोगी आयेगा, रंगस्वामी उसी से साधना संबंधी उपदेश ग्रहण करें।" जब गुरुजी का मृत्युकाल समीप आ गया, तो रंगस्वामी ने उनसे पूछा कि—"आखिर उस योगी की पहिचान क्या होगी ?" गुरु ने बतलाया कि—"वे कुछ कठिनाइयों से बचने के लिए यहाँ आयेंगे और उनकी तीन विशेषताएँ पहले से ही प्रचलित हो चुकेंगी।" ये बातें श्री अरविंद पर लागू होती थीं, इसलिए रंगस्वामी उनकी शरण में आये। श्री अरविंद ने उनकी प्रार्थना स्वीकार करके उनको साधना-मार्ग बतलाया। उसी समय 'योग-साधन' नाम की एक पुस्तक भी परलोक-विज्ञान की सहायता से लिखाई गई। रंगस्वामी ने उस पुस्तक को अपने व्यय से प्रकाशित करके प्रचारित किया।

राजनीति से पृथकता—

यद्यपि पांडिचेरी में श्री अरविंद पूर्णरूप से योग साधना में संलग्न थे और कभी घर के बाहर भी नहीं निकलते थे, तो भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अंग्रेजी सरकार के एजेंट उनको फँसाने के लिए षड्यंत्र रचते ही रहते थे। ऐसे ही किसी व्यक्ति ने पांडिचेरी की पुलिस को सूचना दी कि, दो क्रांतिकारी श्री अरविंद की सहायता से अपत्तिजनक साहित्य तैयार कर रहे हैं और इनका संबंध भारत से भागकर फ्रांस में टिके हुए श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा तथा मैडम कामा आदि क्रांतिकारी नेताओं से हैं। इस पर एक फ्रांसीसी पुलिस अफसर ने आकर श्री अरविंद के आश्रम की तलाशी ली। उसे वहाँ कोई आपत्तिजनक सामग्री तो नहीं मिली, पर ग्रीक और लैटिन भाषाओं में लिखी कई पुस्तकों की पांडुलिपियाँ देखने में आईं। इससे वह इतना प्रभावित हुआ कि इनका मित्र बन गया।

अंग्रेजी पुलिस की दूसरी कार्यवाही यह थी कि उसने वीरेंद्र राय नामक बंगाली जासूस को इनके आश्रम में नौकर करा दिया। कई महीने के बाद कुछ संदेह होने पर उसने स्वीकार किया कि वह भारतीय पुलिस का आदमी है। इसके बाद वह छिपकर वहाँ से भाग गया, पर उसने गंभीरतापूर्वक यह घोषणा भी कि श्री अरविंद या उनके किसी साथी के विरुद्ध उसने कोई रिपोर्ट नहीं की है।

श्री अरविंद के छोटे भाई श्री वारींद्र को बम-केस में आजन्म काले पानी की सजा दी गई थी, पर राजनैतिक कैदियों को विशेष क्षमा-दान की सरकारी घोषणा के अनुसार वे १९२० में छोड़ दिये गए। वे पांडिचेरी आकर इनसे मिले और फिर इनकी प्रेरणा से कलकत्ता में एक आध्यात्मिक केंद्र की स्थापना की। इसके अतिरिक्त लाला लाजपत राय, श्री पुरुषोत्तमदास टंडन डा० मुँजे, श्रीमती सरला चौधरानी, मि० पियर्सन, जैम्स आदि अन्य राजनीतिक कार्यकर्ता भी उनसे समय-समय पर मिलते रहे।

अब उनके एकांतवास का नियम भी कुछ शिथिल हो चला था। शाम के समय प्रायः एकाध स्थानीय राजनीतिज्ञ मित्र बात करने आ जाया करते थे। कभी-कभी वे स्वयं भी मित्रों से मिलने चले जाते थे। आरंभ में इस नियम का भंग उन्होंने तब किया जब वे श्री निवासाचार्य के बहुत आग्रह करने पर उनकी लड़की की शादी में गये। उस समय लोगों ने इसे बड़ी घटना माना था, क्योंकि सदा आश्रम के भीतर रहने से किसी को सहज में इनके दर्शन हो सकना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कठिन था। फिर तो कभी-कभी वे पांडिचेरी के 'मेयर' (नगरपालिका के अध्यक्ष) से भी मिलने चले जाते थे। उन्होंने एक 'आर्य स्टोर्स' भी खोल दिया था, जिसका आर्थिक भार पाल रिचार्ड पर था। इस प्रकार उनकी आर्थिक दशा आरंभिक दिनों की अपेक्षा कुछ सुधर गई, पर फिर भी पाँच-छह वर्ष तक उसमें ऐसा कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ, जिससे वे आराम के साथ रह सकते थे। अधिक किराया न दे सकने के कारण उनको निरंतर ऐसे ही मकान में ही रहना पड़ा, जिसमें पृथक् स्नान घर भी नहीं था और सब लोगों को खुले स्थान में नल के नीचे बैठकर ही स्नान करना पड़ता था।

अरविंद-आश्रम का विकास—

सन् १९५५ में योरोपीय महायुद्ध में भाग लेने के लिए श्री पाल रिचार्ड को फ्रांस जाना पड़ा। उनकी पत्नी मीरा भी उनके साथ गईं। युद्ध समाप्त होने पर जब उनको छुटकारा मिला, तो १९२० में वे पुनः पांडिचेरी आ गये। अब मीरा रिचार्ड ने अरविंद-आश्रम की व्यवस्था अपने हाथ में ले ली, जिससे कुछ समय में वहाँ की कायापलट होने लग गई। उनके लिए स्नानघर की व्यवस्था ऊपर की मंजिल में कर दी गई और खाने-पीने में भी काफी सुधार हो गया। अब उनके पास आने वाले दर्शकों की संख्या अधिक हो गई और कार्यशीलता में भी पूर्वापेक्षा बहुत वृद्धि हो गई।

अब आश्रम में कितने ही लोग साधना के लिए आने लगे और आसपास मकान लेकर रहने लगे। इस प्रकार जब आगंतुकों की संख्या बढ़ने लगी, तो भोजन की समस्या उत्पन्न होने लगी। सब लोगों को उनके स्वाद के अनुकूल भोजन दिया जा सकना कठिन था। इस संबंध में श्री अरविंद ने एक दिन एक साधक से कहा—'किसी को खास तरह और विशेष स्वाद के लिए आग्रह नहीं करना चाहिए। ऐसी आदत में कोई लाभ नहीं होता। घटिया खाना शरीर को खराब कर देता है, इसलिए भोजन उत्तम तो होना चाहिए, पर उत्तम भोजन का मतलब यही है कि उससे शरीर को ठीक पोषण प्राप्त हो सके, न केवल उसका स्वाद बढ़िया हो।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'आर्य' का प्रकाशन और अन्य रचनाएँ—

श्री अरविंद ने जो 'आर्य' नामक मासिक पत्र प्रकाशित किया था, उसमें उच्च श्रेणी के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक लेख प्रकाशित हुआ करते थे। उसके जो दो उद्देश्य प्रथम अंक में प्रकाशित किये गये थे, वे इस प्रकार थे—

(१) अस्तित्व की उच्चतम समस्याओं का विधिवत् अध्ययन।

(२) ज्ञान के विशाल समन्वय की रचना। पूर्व और पश्चिम की मानवतायुक्त सभी धार्मिक परंपराओं का मेल। इस कार्य को बौद्धिक और वैज्ञानिक अनुशासन के साथ पूरा किया जायेगा।

इसमें प्रथम पाँच-छह वर्षों में जो लेख प्रकाशित हुए थे, उनमें से कुछ विशेष महत्त्व के ये थे—'गीता निबंधावली'—'दैवी जीवन—'योग समन्वय'—'वेद-रहस्य'—'मानव एकता का आदर्श'—'भारतीय संस्कृति के पक्ष में—'सामाजिक विकास का मनोविज्ञान'। इनमें से कई रचनाएँ संशोधित होकर पुस्तकाकार भी प्रकाशित हो चुकी हैं। कुछ लेख तो ऐसे हैं, जो सार्वभौम दृष्टि से स्थायी निधि है।

इन लेखों और अपनी अन्य रचनाओं में श्री अरविंद ने जो विचार प्रकट किए हैं, वे एक प्रकार से भविष्य के स्वप्न थे और उनको अंतरंग भावनाओं से ही उत्पन्न हुए थे। पर यह स्वीकार करना पड़ता है कि जहाँ अन्य लोगों के स्वप्न प्रायः स्वप्न ही रह जाते है, उन्होंने अपने स्वप्नों को काफी दूर तक सत्य सिद्ध कर दिखाया और उनकी पूर्ति में काफी परिश्रम भी किया। सन् १९४७ की १५ अगस्त को जब भारत स्वतंत्र हो गया, तो उन्होंने अपने बयान में कहा था—

"आज के दिन मैं लगभग समस्त संसार के उन आंदोलनों को देख रहा हूँ, जिन्हें मैं अपने जीवन काल में फलीभूत देखने की आशा करता था। यद्यपि उस समय वे ऐसे थे कि उनकी सफलता एक स्वप्न-सी जान पड़ती थी, पर अब वे सफल होने के निकट पहुँच चुके हैं या सफलता के मार्ग पर है। भारतवर्ष की स्वाधीनता के पश्चात् मेरा दूसरा स्वप्न था—एशियावासियों के पुनरुत्थान और मुक्ति का, जिससे वह मानव-सभ्यता की प्रगति में अपना महान् योग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दे सकें। तीसरा स्वप्न था समस्त संसार का एक संघ स्थापित होने का जिसका बाह्य आधार मानव-मात्र का उत्तम, समुज्ज्वल और शिष्ट जीवन हो।" ये सभी बातें निकट आती जा रही हैं और कम या ज्यादा अंशों में उनकी संभावना बढ़ती जा रही है।

इसके पश्चात् वर्तमान परिस्थिति पर दृष्टि डालते हुए उन्होंने भविष्य की जो रूपरेखा खींची, वह बहुत महत्त्वपूर्ण और विश्व-संचालक शक्तियों के संबंध में उनकी जानकारी की परिचायक है। उन्होंने कहा—"जो कुछ प्रयत्न किये जा रहे हैं, उनके मार्ग में आपत्तियाँ आ सकती हैं, वे उन यत्नों को नष्ट कर सकती हैं। फिर भी अंतिम परिणाम निश्चित है। कारण यह है कि 'एकीकरण' प्रकृति की आवश्यकता है, यही उसकी अनिवार्य गति है। समस्त देशों के लिए स्पष्ट रूप से यही नियम आवश्यक है। जब तक ऐसा 'एकीकरण' न होगा, छोटे राष्ट्रों की स्वतंत्रता किसी भी समय खतरे में पड़ सकती है और बड़े तथा शक्तिशाली राष्ट्रों का जीवन भी अरक्षित हो सकता है। ऐसी दशा में 'एकीकरण' में सभी का हित है और केवल मानव की जड़ता और मूर्खतापूर्ण स्वार्थ भाव ही उसमें बाधक बन सकता है। पर प्रकृति की आवश्यकता और दैवी इच्छा के आगे ये चीजें सदैव टिकी नहीं रह सकतीं, तो भी इसकी प्राप्ति के लिए केवल बाहरी आधार ही काफी नहीं है। इसके लिए अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण और सद्भाव की भी आवश्यकता है। ऐसे अंतर्राष्ट्रीय संगठन और संस्थाओं का निर्माण होना आवश्यक है, जिनसे संसार के सभी भागों में बसने वाले आपस में सब प्रकार का आदान-प्रदान कर सकें। इसका अर्थ यह नहीं कि लोगों की राष्ट्रीयता की भावना सर्वथा जाती रहेगी, पर वह क्रमशः विशुद्ध रूप में पहुँच जायेगी और उसकी युद्धप्रियता नष्ट हो जायेगी। इससे मानव-जाति में एकता की एक नई भावना जागृत हो जायेगी।"

"एक और स्वप्न है, संसार को भारत की तरफ से आध्यात्मिकता का उपहार, जिसका श्री गणेश हो चुका है। भारत की आध्यात्मिकता योरोप और एशिया में पर्याप्त परिमाण में प्रवेश पा चुकी है। यह आंदोलन बढ़ता ही जायेगा। युग-संकटों के साथ ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संसार की अधिकाधिक आँखें उसकी ओर आशा से देख रही हैं और बहुसंख्यक लोग उसका क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त करने को आ रहे हैं।

"अंतिम स्वप्न है—विकास की ओर एक नया कदम, जिससे मनुष्य वर्तमान की अपेक्षा उच्च और विशाल चेतना की ओर अग्रसर हो सके। वह उन समस्याओं को हल कर सके, जिनको हल करने में आज तक परेशानी और किंकर्तव्यविमूढ़ता अनुभव कर रहा है। यह एक ऐसा आदर्श है, जिसका प्रभाव भारत और पश्चिम के प्रगतिशील मस्तिष्कों पर पड़ने लगा है। इस कार्य में अन्य क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक कठिनाइयाँ हैं, पर वे दूर की जा सकती हैं और जगन्नियंता की इच्छा हुई तो शीघ्र ही उनका अंत हो जायेगा। इस कार्य का आरंभ आत्मा और अंतर्चेतना की शक्ति द्वारा इसी देश में हो सकता है। यद्यपि इसका लक्ष्य सार्वभौम होगा, पर इसका केंद्र भारत में ही रह सकता है।"

बाह्य जगत् से संबंध विच्छेद—

श्री अरविंद की साधना जैसे-जैसे बढ़ती गई बाह्य संसार से उनका संबंध कम होता गया। अंत में उनकी सिद्धि का दिन आ पहुँचा। उस २४ नवंबर, सन् १९२६ को उन्होंने संसार से पूर्णतः संबंध विच्छेद करके एकांत जीवन बिताने का निश्चय कर लिया। उसके पश्चात् अपने शिष्यों और साधकों से जो मार्ग-दर्शन का संबंध रखा, वह भी 'माताजी' के द्वारा होने लगा। इस बीच में उनके अनुयायियों और शिष्यों की संख्या पर्याप्त हो चुकी थी और 'आश्रम' का स्वरूप और व्यवस्था भली प्रकार जम गई थी। इस कार्य को पहले भी 'माताजी' ही करती थी और श्री अरविंद के नीरव साधना में तल्लीन हो जाने के पश्चात् तो एकमात्र वे ही सबका संचालन करने लगीं और अब तक कर रही हैं।

इस प्रकार नवंबर १९२६ से जीवन के अंतिम दिन (५ दिसंबर, १९५०) तक वे एकांतवास करके एक ऐसी साधना में निमग्न रहे, जिसका उद्देश्य आध्यात्मिक भाव संपन्न लोगों को साक्षात्कार के मार्ग पर आगे बढ़ने में सहायता पहुँचाना था। भारत तथा अन्य देशों के उद्धार के लिए जो आंदोलन चल रहे थे, उनमें भी वे संकल्प-शक्ति

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

द्वारा सहयोग देते रहे। इस प्रकार एकांत और अज्ञात स्थिति में रहते हुए भी वे संसार के सभी महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों और योजनाओं में महत्त्वपूर्ण प्रेरणा और शक्ति प्रदान करते थे। दैवी-शक्तियों की कार्य-प्रणाली प्रायः यही होती है। बहुत थोड़े दैवी महामानवों ने प्रकट रूप से कार्य किया है। श्री अरविंद ने बहुत पहले ही कह दिया था कि उनकी साधना का उद्देश्य अपनी मुक्ति प्राप्त करना नहीं है, वरन् वे बंधनों में पड़े व्यक्तियों और समाजों के लिए एक ऐसा नवीन और सुनिश्चित मार्ग प्रस्तुत कर देना चाहते हैं, जिस पर चलकर वे अपने उस लक्ष्य तक पहुँच सकें।

मानवता को आध्यात्मिक दान—

आरंभिक जीवन में श्री अरविंद एक बहुत ऊँचे दर्जे के विद्वान् तथा साहित्यकार के रूप में प्रसिद्ध हुए थे। उन्होंने साहित्यिक विषयों पर बड़े-बड़े ग्रंथ लिख डाले थे। उन्होंने 'सावित्री' नाम का एक महाकाव्य भी अंग्रेजी मे लिखा है, जिसकी तुलना कुछ लोग महाकवि मिल्टन की रचनाओं से करते हैं। वैसे तो यह एक पौराणिक कथा ही है, पर इसको पढ़ते समय पाठक इस दृश्य जगत् से बहुत ऊपर एक अज्ञात लोक में पहुँच जाता है। उसके सम्मुख सृष्टि के मूल रहस्य प्रगट होने लगते हैं और वह विश्व-चेतना के उस सर्वोच्च शिखर तक पहुँच जाता है, जिसका अनुसंधान अभी तक किसी ने नहीं किया।

वेदों, उपनिषदों और गीता की समीक्षा में श्री अरविंद ने जो पुस्तकें और लेखमालाएँ लिखी हैं, उनसे भारतवर्ष के इस महान् साहित्यकार की महत्ता पर एक अभिनव प्रकाश पड़ता है। जैसा हम पहले बतला चुके हैं, उन्होंने वेदों का स्वतंत्र रूप से अध्ययन किया था और उनके गूढ़ार्थ को हृदयंगम करके वास्तविक आशय को प्रकट करने का प्रयत्न किया था। इस संबंध में उन्होंने एक स्थान पर लिखा है—

"वैदिक-युग में भारत अथवा मिश्र में आध्यात्मिक ज्ञान या गूढ़ विद्या की सफलता केवल इने-गिने लोगों को ही मिली थी। वह जन समूह तक नहीं फैली थी। मानव समूह तो धीरे-धीरे विकास की मंजिलों को पार करते हुए, जड़वादी सशक्त प्राणी से विचारशील

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्राणी बना है। थोड़े से लोग ऐसे हुए हैं, जो बंधनों-बाधाओं को तोड़कर आगे बढ़े और निगूढ़ विद्या तथा ज्ञान के दरवाजे खोलने में सफल हुए और आध्यात्मिक मनोमय पुरुष बन सकें।

"भारत में ऐसे 'सहज ज्ञान' का प्रभाव पहले आया। बौद्धिक मानस का विकास तो बाद में दर्शन और विज्ञान से हुआ। वैदिक काल के पश्चात् बौद्धिक और तत्त्वज्ञान का युग आया, जिसने आध्यात्मिक तत्त्वों को अपना आधार बनाया और उन्हें नये ढंग से समझाने की चेष्टा की। पर यह प्रयत्न वैदिक ऋषियों की तरह सहज ज्ञान से अथवा गूढ़-प्रक्रिया से संचालित न था, वरन् मानसिक-चिंतन, कल्पना और तर्क की शक्ति द्वारा प्राप्त किया जाता था। साथ ही योग-क्रियाएँ भी विकसित हुईं, जिससे विचारकों के मन में आध्यात्मिक अनुभूति के मार्ग विकसित होते गए।"

राजनैतिक क्षेत्र में भी श्री अरविंद की देन बड़ी ठोस थी और बहुत-से लोग जिनको आध्यात्मिकता से प्रेम नहीं हैं, उनकी प्रतिष्ठा राजनैतिक कार्यों के लिए ही करते हैं। जिस समय उन्होंने राजनीति में हिस्सा लिया, उस समय और आजकल की परिस्थिति में जमीन-आसमान का अंतर है। आज का वातावरण पार्टीबंदी के कारण जैसा दूषित हो रहा है और जिस प्रकार राजनीति की ओट में लोग गंदे से गंदे कामों को भी करने में संकोच नहीं करते, वैसी दशा उस समय न थी। तब राजनीति में हाथ डालना आग से खेलने के समान था, जिसमें अधिक से अधिक त्याग करना और हर तरह के कष्टों को सहन करना अनिवार्य था। उनके लिए भारतभूमि माता और देवी के समान पूजनीय थी और उन्होंने अपना सर्वस्व उसकी वेदी पर उत्सर्ग कर देने की प्रतिज्ञा की थी। इसलिए उनकी राजनीति का आधार 'धर्म' था, जिसमें किसी प्रकार का मैल अथवा दूषण नहीं था।

वे सबसे पहले राजनीतिक नेता थे, जिन्होंने स्पष्ट शब्दों में अंग्रेजों से संबंध भंग करके पूर्ण स्वाधीनता की बात कही थी। उन्होंने 'युगांतर' के लेखों में यह घोषणा की थी कि, वे अंग्रेजी अदालतों को न्यायालय नहीं मानते और इसलिए हमको उनके सामने अपनी सफाई देने की आवश्यकता नहीं। विदेशियों के पंजे से देश को मुक्त कराने के लिए उन्होंने आतंकवाद का ही नहीं, छापामार युद्ध का भी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समर्थन किया था। उनका मत था कि जब अधिकांश जनता में राजनीतिक चेतना उत्पन्न हो जायेगी और वह अंग्रेजी शासन के विरुद्ध कार्य करने को तैयार हो जायेगी, तो अंग्रेज सब कुछ खोने की अपेक्षा भारतवासियों को स्वराज्य का अधिकार देने को राजी हो जायेंगे।' अंत में उनका यह विचार सत्य सिद्ध हुआ और महात्मा गाँधी ने उसी का अवलंबन करके देश की स्वतंत्रता के द्वार तक पहुँचा दिया।

श्री अरविंद भारतीय संस्कृति से बड़ा प्रेम रखते थे और उसके समर्थन में उन्होंने बहुत कुछ लिखा है। विलियम आर्थर नामक अंग्रेज लेखक ने एक बार भारतीय कला और संस्कृति के विरुद्ध बहुत-सी उल्टी-सीधी बातें लिख मारी थीं और इस देश को असभ्य तथा बर्बर सिद्ध करने का दुस्साहस किया था। उसने भारत को पलायनवादी, परलोकवादी, क्रियाहीन कहा था और उसके धर्म को अंधविश्वास का समूह कहकर हँसी उड़ाई थी। श्री अरविंद ने एक लेखमाला के रूप में इस विद्वेषपूर्ण आलोचना का बड़ा जोरदार उत्तर दिया। उन्होंने सिद्ध किया कि कम से कम तीन हजार वर्ष से भारत संसार को बहुत कुछ देता और सिखा रहा है और उसने मानव-क्रियाशीलता के हर क्षेत्र में मानवता को अग्रसर करने में महत्त्वपूर्ण योग दिया है। आज भी उसकी देन जारी है और संसार के बड़े-बड़े विद्वान् इस तथ्य को कृतज्ञता के साथ स्वीकार करते हैं।

श्री अरविंद की योग-प्रणाली—

श्री अरविंद ने जिस योग-प्रणाली का प्रचार किया, वह पहले से प्रचलित योग-प्रणालियों से कितनी ही बातों में बिल्कुल नवीन थी। उन्होंने कहा कि—"वैदिक काल में योग का आशय यह था कि उसकी सहायता से मनुष्य अपने स्वाभाविक जीवन का अधिक विकास कर सके। पर मध्यकाल में उसे केवल गृहत्यागी साधु-संन्यासियों के काम की चीज बना दिया गया।" उनके मतानुसार—"हमारा समस्त जीवन 'योग' ही है, चाहे हम उसे समझकर करें और चाहे बिना समझे, क्योंकि इस शब्द से हमारा तात्पर्य यही होता है कि मनुष्य अपनी सोई हुई शक्तियों को जगा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सके और उसकी सहायता से आत्म-परिपूर्णता की ओर अग्रसर हो सके। अगर हम जीवन को उसकी प्रतीतियों के आधार पर देखें, तो समस्त जीवन एक 'विशाल योग' ही जान पड़ता है।" प्रकृति माता के इस सहज योग और विशेष योग पद्धतियों में अंतर यही है कि जहाँ प्रकृति इस कार्य को विस्तृत रूप में मंदगति से कर रही है, इस कार्य में बहुत-सी सामग्री और शक्ति का क्षय भी कर रही है, वहाँ विशिष्ट-प्रणालियों द्वारा वही काम शक्ति को एक ही लक्ष्य पर केंद्रित करके तीव्रता और शीघ्रता से पूरा कर लिया जाता है। इन दोनों मार्गों में से हम किसी का भी अवलबन क्यों न करें, योग का सच्चा और पूरा उद्देश्य तभी सिद्ध होता है, जबकि योग की साधन-विधि और साधक की प्रकृति में तादात्म्य स्थापित हो जाय।

श्री अरविंद ने अपने 'पूर्ण योग' का विस्तृत विवेचन 'आर्य' मासिक पत्र में किया था, जिसकी लेखमाला छह वर्ष तक धारावाहिक रूप से प्रकाशित होती रही। इसका शीर्षक था—"सिंथैसिस ऑफ योग" (योग-समन्वय) इसमें उन्होंने भारतवर्ष में प्रचलित एकांगी योग-प्रणालियों (जैसे हठयोग, ज्ञानयोग, राजयोग, भक्तियोग, ध्यानयोग, लययोग आदि) को त्यागकर एक ऐसी प्रणाली का प्रतिपादन किया है, जो संपूर्ण जीवन की पूर्णता और साधना के उपाय बतलाती है। पर वह शैली 'वैज्ञानिक' होने से अधिक गूढ़ और क्लिष्ट हो गई है। हमने नीचे उसका सारांश यथासंभव सरल रूप में देने का प्रयत्न किया है—

प्रकृति का निरीक्षण करने से यही जान पड़ता है कि उसका उद्देश्य मानव-चेतना को अधिकाधिक विकसित करना ही है। वर्तमान समय में यह चेतना अपूर्ण है और उस पर ज्ञान की अपेक्षा अज्ञान का प्रभाव ही अधिक है। अहंकार के कारण द्वंद्व-भाव या विरोध की उसमें उत्पत्ति हो जाती है। पर यह स्थिति अंतिम नहीं है, इसके पश्चात् एक ऐसी स्थिति अवश्य होनी चाहिए, जिसमें यह द्वंद्व और विरोध न हो और एक अनुकूल समन्वय पाया जाए। यह उददेश्य कोई अपूर्व या अनहोनी बात नहीं है। मनुष्य जाति के इतिहास में अनेक आध्यात्मिक वीरों ने प्रयत्न करके इस स्थिति को प्राप्त किया है। श्री अरविंद के विचारों और प्रणाली में विशेषता यही है कि इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उद्देश्य को कुछ इने-गिने 'वीरों' के लिए ही नहीं वरन् मनुष्यमात्र के लिए आवश्यक और संभव बतलाया है। वे कहते हैं कि, मानव चेतन के भीतर कुछ ऐसे निश्चित संकेत मिलते हैं, जिनसे प्रगट होता है कि मनुष्य एक दिन 'अति मानवता' की स्थिति को अवश्य प्राप्त कर लेता है। इस 'अतिमानवता' को हम 'देवत्व' की स्थिति भी कह सकते हैं।

इस प्रकार श्री अरविंद के योग का लक्ष्य 'मानव-चेतना के स्वरूप का बदलना है। इस समय यह चेतना अहंकारमयी होने से वस्तुओं के बाह्य रूप तक ही सीमित रह जाती है। पर नवीन और परिवर्तित रूप में यह विश्व-सत्ता के अखंड आत्मतत्त्व को ग्रहण करने वाली होगी। 'मानव-चेतना' को देव-चेतना' के रूप में परिवर्तित करने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी संपूर्ण शक्तियों का प्रयोग किया जाए, अर्थात् ज्ञान, कर्म और भक्ति, इन तीनों को समन्वय की स्थिति में लाया जाए, इस प्रकार के सर्वांगीण विकास के लिए उद्योग करना ही जीवन का उद्देश्य है। साथ ही यह मनोवैज्ञानिक सत्य भी स्वीकार करना पड़ेगा कि हर व्यक्ति की ज्ञान, कर्म अथवा भक्ति में से किसी एक में विशष रुचि होती है। इस रुचि या प्रवृत्ति का पूरा उपयोग करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपनी प्रवृत्ति की प्रबलता ही 'विशेष मार्ग' है। इसको लेकर वह अपनी साधना आरंभ करे और बढ़ावे, परंतु संपूर्ण चेतना के रूपांतर के लिए उसे दूसरे अंगों को भी विकसित करना होगा। ऐसा न करने से उसकी विशेष प्रवृत्ति में भी अपूर्णता रह जायेगी। उदाहरणार्थ किसी भक्त का भक्ति-भाव तब तक पूर्णता प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक वह शुद्ध ज्ञान के क्षेत्र में भी प्रगति न कर लेगा।

अरविंद का पूर्णयोग और उसका महत्त्व—

भारतीय इतिहास के मध्यकाल में कुछ शारीरिक क्रियाओं अथवा खान-पान के नियमों का नाम ही 'योग' पड़ गया था। दूसरे शब्दों में 'योग' शारीरिक क्षमता का एक अभ्यास बन गया था, अथवा व्यवहार की एक मर्यादा हो गया था। अरविंद का योग व्यावहारिक कर्मों की कुछ अंशों में उपयोगिता मानते हुए भी अपना विशेष ध्यान चेतना की गति अथवा वृत्तियों के व्यवहार पर रखता है। दृष्टांत के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लिए अरविंद इस बात को विशेष महत्त्व नहीं देते कि रसनेंद्रिय को जीतने के लिए भोजन का नियंत्रण कुछ बाह्य व्यावहारिक नियमों द्वारा किया जाए। भारतीय साधना-प्रणाली में उपवास को एक प्रधान साधन के रूप में माना गया है, परंतु अरविंद इसके पक्ष में अधिक नहीं हैं, क्योंकि साधारणतया उपवास करने की अवस्था में मनुष्य भोजन का अधिक चिंतन करता है अथवा उसके बाद अधिक लालच से खाता है। रसनेंद्रिय के संबंध में साधना का लक्ष्य होना चाहिए कि मनुष्य आवश्यकता के अनुसार बिना लालच या अरुचि के, हर स्थिति में एक-सी प्रसन्नता की भावना से भोजन करे। उसके लिए सदा गंभीर चित्त की अभीप्सा (अभिलाषा) होनी चाहिए। उसके लिए कभी उपवास का उपयोग भी किया जा सकता है, परंतु उपवास का आध्यात्मिकता से कोई निश्चित या अमिट संबंध नहीं है और जबर्दस्ती उपवास रखना तो स्पष्टतः हानिकारक है।

जबर्दस्ती या बलात्कार का विचार अरविंद के योग के प्रतिकूल है। अनेक साधक इंद्रिय-विषयों से घबराकर जो विषय उन्हें ज्यादा तंग करते हैं, उससे उल्टा कर्म करना चाहते हैं। जैसे किसी का मन बार-बार स्वादिष्ट पदार्थों के पीछे लगता हो, तो वह परेशान होकर अत्यंत विरोधी कर्म पर उतारू हो जाता है, जैसा हम प्रायः अघोरियों आदि के बारे में सुना करते हैं। साधारण श्रेणी के साधकों के मामले में ऐसी-चेष्टा वास्तव में सफल नहीं होती। किसी क्लिष्ट वृत्ति या आदत को सुधारने के लिए उसके साथ वैसा ही व्यवहार चाहिए जैसा किसी बिगड़े हुए बालक को सुधारने के लिए किया जाता है। जैसे बिगड़े हुए बालक को सुधारने के लिए यदि ताड़ना की जाती है, तो बाद में उसे समझाया भी जाता है कि उचित व्यवहार क्यों ज्यादा अच्छा है। हमारा उद्देश्य हमेशा यही रहता है कि अंततः बच्चे को स्वयं यह विश्वास हो जाए कि सभ्य व्यवहार करना ही उसके योग्य है और वही उसकी सामान्य और सहज स्थिति हो जाये। इसी प्रकार साधक के लिए भी आवश्यक है कि वह असीम धीरज के साथ धीरे-धीरे मन को मनाता चला जाए, जिससे उसका स्वभाव स्वयमेव बदलता जाए। बलात्कार को हम बिल्कुल निरर्थक नहीं कह सकते, बच्चे को ताड़ना भी दी जाती है, उसे कई बार अनुचित कार्यों से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जबर्दस्ती भी रोका जाता है, पर स्वभाव का जड़ से परिवर्तन इस प्रकार संभव नहीं। स्वभाव और आंतरिक वृत्ति को बदलने के लिए उसके दबाने से काम नहीं चलता, बल्कि ज्ञान और सहानुभूति के साथ उसे मनाकर ठोस रास्ते पर लाना ही आवश्यक होता है।

अरविंद का योग विशेष रूप से मनोवैज्ञानिक है। साधना के सिद्धांत तो सबके लिए एक-से ही हैं, परंतु किसके लिए—किस समय अथवा किस अवस्था में, कैसी साधना उपयोगी है ? यह प्रत्येक व्यक्ति के आंतरिक विकास और स्थिति पर निर्भर है। यहीं पर वास्तव में गुरु की आवश्यकता अनिवार्य हो जाती है। साधना और योग में पुस्तकें पढ़कर इसीलिए सफलता नहीं मिलती कि इनके क्रमभेद बड़े सूक्ष्म हैं। अवस्था और व्यक्ति के भेद से इनके क्रम में भेद करना आवश्यक होता है। अरविंद ने एक स्थान पर कहा है कि, वास्तव में योगी का गुरु परमात्मा है, पर विशेष व्यक्तियों को छोड़ कर सामान्यतया साधक के लिए शरीरधारी गुरु की आवश्यकता होती है। गुरु अपने आत्मबल से सूक्ष्म रूप में साधक को आत्म-जिज्ञासा को जाग्रत् करता है और अपने उसी सूक्ष्म प्रभाव द्वारा उसे भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में से गुजारते हुए चेतना के मार्ग पर अग्रसर कराता है।

साधारणतया योग का उद्देश्य समाधि अवस्था और उसका आनंद माना जाता है। भारतवासियों की वर्तमान धारणा के अनुसार इसके लिए संसार का त्याग आवश्यक समझा जाता है। अधिकांश अध्यात्म विषयक ग्रंथों में इसी मत का प्रतिपादन किया गया है। केवल 'गीता' ही एकमात्र ऐसा ग्रंथ है, जिसने इस मत को स्वीकार न करके संसार को ही आध्यात्मिकता का वास्तविक क्षेत्र माना है। अरविंद भी योग का अधिकारी प्रत्येक व्यक्ति को समझते हैं और कहते हैं कि—एक समय आयेगा, जब समग्र मानव-जाति की चेतना विकसित होकर वर्तमान की अपेक्षा कहीं अधिक उच्च स्तर को प्राप्त कर लेगी। उच्च स्थान पर पहुँच जायेगी।

× × × ×

अरविंद की योग-प्रणाली के तीन मौलिक अभ्यास हैं—एक अभीप्सा (एस्पाइरेशन), दूसरा परित्याग (रीजेक्शन), तीसरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आत्मोद्घाटन (डिवाईन इन्फ्लुऐंस)। अभीप्सा का अर्थ है—गंभीर आत्म-जिज्ञासा की अंतःचेष्टा। यह ऊर्ध्वमुखी और अंतर्मुखी होती है। यह आत्मा की अपने पूर्णानंद के लिए खोज है। अभीप्सा से इस स्वरूप का आधार अनुभव ही है और साधक कुछ अभ्यास के पश्चात् ही उसे स्पष्ट पहचानने लगता है। प्रारंभ में तो अभीप्सा साधारण इच्छा के समान ही जान पड़ती है, पर इन दोनों में बड़ा अंतर है। इच्छा, वास्तव में हमारी बाह्य चेतना—सामान्य मन-बुद्धि की चेतना है, जो बाह्य जगत् के पदार्थों से रूप, रस, गंध आदि को ग्रहण करती है। इन रूप, रस आदि के लिए हमारे मन में ग्रहण अथवा त्याग की जो प्रेरणा उत्पन्न होती है, उसी का नाम इच्छा है। इसके विपरीत जब हम बाह्य पदार्थों के ऊपरी रूप, रस, गंध को नहीं, बल्कि उनके आंतरिक भाव और सत्य को ग्रहण करते हैं, तब हमको अपने भीतर एक गंभीर प्रेरणा का अनुभव होता है, वही अभीप्सा होती है।

योग-मार्ग की उपयोगिता—

अंत में हम फिर यह बतला देना चाहते हैं कि 'योग-मार्ग' को साधु-संन्यासियों या गृहत्यागियों की चीज समझना एक बड़ी गलती है। इसका उद्देश्य वास्तव में शरीर, मन और आत्मा (चेतना) को इस प्रकार प्रशिक्षित करना है, जिससे वे विपरीत परिस्थितियों में भी अपना संतुलन स्थिर रख सकें। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि—यह संसार केवल फूलों का बगीचा ही नहीं, वरन् इसमें काँटे भी हैं और सच पूछा जाए, तो वर्तमान समय में तो अधिकांश व्यक्तियों के लिए काँटों की ही प्रधानता है। ऐसी स्थिति में योग-दृष्टि को अपनाया जाये, तो प्रत्येक परिस्थिति में मनुष्य मन को संतुलित और शांत रखकर अपना कर्तव्य पालन कर सकता है और जो सदैव अपना कर्तव्य पालन करता रहता है, उसका ही जीवन सफल माना जा सकता है। यदि समग्र मानव-जाति को इस मार्ग की जानकारी करा दी जाए और वे अपनी मनोवृत्तियों को इसी के अनुकूल बना लें, तो निस्संदेह पृथ्वी पर 'देवत्व' का अवतरण हो सकता है।

❐ ❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org